UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 4 सत्यवादी हरिश्चन्द्र (महान व्यक्तिव)

पाठ का सारांश

महाराज हरिश्चन्द्र सत्यवादी थे। इनको जन्म सतयुग में हुआ था। इनकी पत्नी का नाम तारामती और पुत्र का नाम रोहिताश्व था। एक बार राजा ने स्वप्न में अपना सारा राज्य महर्षि विश्वामित्र को दान में दे दिया। दूसरे दिन महर्षि विश्वामित्र इनके दरबार में आए। उन्होंने महाराज को स्वप्न में दान की बात याद दिलाई। महाराज ने प्रसन्नता से सारा राज्य विश्वामित्र को दान कर दिया। दान करने के बाद दक्षिणा दी जाती है। सारा राज्य तो वे दान कर ही चुके थे। अब दक्षिणा के लिए धन कहाँ से आए! हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र को दक्षिणा देने के लिए अपने को बेचने का निश्चय किया। ये काशी की ओर चल पड़े। वहाँ जाकर इन्होंने अपने-आप को बेचने की पूरी-पूरी कोशिश की। शाम को रानी तथा पुत्र को एक व्यक्ति ने मोल ले लिया तथा हरिश्चन्द्र को श्मशान के स्वामी ने मोल ले दिया।

महाराज हरिश्चन्द्र को श्मशान की रखवाली का काम मिला और तारामती को घर का चौका-बर्तन करने का। एक दिन रोहिताश्व को एक सर्प ने डस लिया। तारामती उसे लेकर रोते हुए श्मशान जा पहुँची। उसे पता नहीं था कि पति श्मशान में ही हैं। हरिश्चन्द्र ने तारामती से श्मशान का कर माँगा। तारामती के पास उस समय कुछ न था। हरिश्चन्द्र ने कहा- “मैं बिना कर लिए तुम्हें यह मुर्दा नहीं जलाने दूंगा, ऐसा करना अपने मालिक के प्रति विश्वासघात होगा।” लाचार होकर तारामती ने श्मशान का कर चुकाने के लिए अपनी साड़ी फाड़ना शुरू कर दिया।

उसी समय आकाश में घोर गर्जन हुआ, विश्वामित्र प्रकट हो गए, रोहिताश्व भी जीवित हो उठा। विश्वामित्र ने कहा- “हे राजा! तुम धन्य हो। यह सब तुम्हारी परीक्षा हो रही थी। तुम श्रेष्ठ, सत्यवादी और धार्मिक हो।” वास्तव में, हरिश्चन्द्र हमारे ऐसे पूर्वज हैं, जिन पर प्रत्येक भारतवासी को गर्व है।

शिक्षा- सत्य बोलने, धर्मपालन और कर्तव्यनिष्ठा से सभी कठिन कार्य सरल हो जाते हैं।

https://www.evidyarthi.in/